अहिंसा यात्रा प्रेस विज्ञप्ति

महाश्रमण दरबार में उमड़ा श्रद्धालुओं का ज्वार

-रविवार होने के कारण मानों पूरा चेन्नई पहुंच गया आचार्यश्री के दर्शन और प्रवचन श्रवण को

-विशाल प्रवचन पंडाल बना जनाकीर्ण, पूरा परिसर श्रद्धलुओं रहा अटापटा

-'ठाणं' आगम के माध्यम आचार्यश्री ने प्रत्यक्ष और परोक्ष ज्ञान को किया व्याख्यायित

05.08.2018 माधावरम, चेन्नई (तमिलनाडु): चेन्नई महानगर के माधावरम में चातुर्मासिक प्रवास कर रहे जैन श्वेताम्बर तेरापंथ धर्मसंघ के देदीप्यमान महासूर्य, कीर्तिधर महापुरुष, अखण्ड परिव्राजक आचार्यश्री महाश्रमणजी का पावन सान्निध्य पाने को मानों रविवार को पूरा चेन्नई शहर ही उमड़ पड़ा। चतुर्मास प्रवास स्थल परिसर में बने भव्य और विशाल प्रवचन पंडाल भी श्रद्धालुओं की उपस्थिति से छोटा-सा पड़ गया। यहां तक की पूरा परिसर ही लोगों से अटापटा हुआ नजर आ रहा था। आचार्यश्री का प्रवास स्थल हो अथवा असाधारण साध्वीप्रमुखाजी का प्रवास स्थल हर तरफ लोग ही लोग नजर आ रहे थे।

रविवार को सूर्योदय से पूर्व ही आचार्यश्री महाश्रमण चतुर्मास प्रवास स्थल परिसर में लोगों की भीड़ उमड़नी आरम्भ हो गई। चतुर्मास का पूर्ण लाभ लेने के लिए देश भर के विभिन्न हिस्से से पहुंच रहे श्रद्धालुओं के अलावा चेन्नई महानगर के श्रद्धालुओं की भी आज विशेष उपस्थिति नजर आ रही थी। रविवार के दिन आॅफिस और स्कूल की छुट्टी के कारण श्रद्धालु सपरिवार अपने आराध्य की उपासना में उपस्थित हो रहे थे। नौ बजते-बजते विशाल चतुर्मास प्रवास स्थल लोगों की विशाल उपस्थिति के आगे सिमटता-सा लग रहा था। लोगों के हृदय में उमड़ते श्रद्धा के भावों का ज्वार हिलोरें मार रहा था।

नित्य की भांति आचार्यश्री जब प्रवचन पंडाल की ओर पधारे तो पूरा मार्ग श्रद्धालुओं से पटा हुआ था। और विशाल 'महाश्रमण समवसरण' तो आज पहले से ही जनाकीर्ण बन गया था। पूरे प्रवचन पंडाल में मानों तिल रखने की जगह नहीं बची थी। लोग प्रवचन के आसपास के वैसे स्थानों पर भी उपस्थित थे जहां से आचार्यश्री के प्रवचन को आसानी से सुना जा सके और एलईडी स्क्रीन पर आचार्यश्री के दर्शन भी हो सकें। आचार्यश्री के मंचासीन होकर जब श्रद्धालुओं पर आशीषवृष्टि की तो पूरा वातावरण जयकारों से गुंजायमान हो उठा।

आचार्यश्री ने 'ठाणं' आगमाधारित अपने पावन प्रवचन में ज्ञान के दो प्रकार प्रत्यक्ष और परोक्ष ज्ञान को विवेचित करते हुए कहा कि ज्ञान प्रकाश देने वाला होता है। किसी भी विषय का ज्ञान अपने आप में अच्छा होता है। यह बात अलग होती है की उस ज्ञान को आदमी किस तरह उपयोग करता है। ज्ञान के दो प्रकार बताए गए हैं-प्रत्यक्ष ज्ञान और परोक्ष ज्ञान। सीधे आत्मा से जुडने वाला ज्ञान प्रत्यक्ष ज्ञान होता है। उसे किसी इन्द्रिय की सहायता की आवश्यकता नहीं होती। किसी माध्यम से अर्जित होने वाला ज्ञान परोक्ष ज्ञान होता है। यह ज्ञान इन्द्रियों के माध्यम से होता है। केवल ज्ञान प्रत्यक्ष ज्ञान का उदाहरण है। केवल ज्ञान ही सर्वोच्च ज्ञान है। केवलज्ञान प्राप्त होने के उपरान्त अन्य कोई ज्ञान शेष नहीं रह जाता। यह ज्ञान सीधे आत्मा से जुड़ता है, इसलिए यह प्रत्यक्ष ज्ञान होता है। जो ज्ञान स्रोतेन्द्रिय के माध्यम से प्राप्त हो, जो ज्ञान चक्षुरेन्द्रिय अर्थात् देखकर प्राप्त हो, जो ज्ञान त्वचा के स्पर्श से हो, जो ज्ञान जिह्वा से हो वह सारे ज्ञान परोक्ष ज्ञान होते हैं। आदमी को ज्ञान के विकास का निरंतर प्रयास करना चाहिए। मंगल प्रवचन में उपरान्त आचार्यश्री ने चतुर्मास प्रवास स्थल में बने किडजोन व 'संस्था शिरोमणि' जैन श्वेताम्बर तेरापंथी महासभा के शिविर कार्यालय को भी अपने चरणस्पर्श से पावन बनाया।